भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विष्णुपुर घराने की भूमिका

पुष्पांजली

शोध छात्रा संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

Author Email: iampushpanjalii@gmail.com

संगीत कला संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। वैदिक काल से ही यह एक शुद्ध सरिता की भांति बहती चली आ रही है, जिसे जीवित रखने में कहीं–न–कहीं घरानों का विशेष योगदान रहा है। निरन्तर जीवित रहने वाली यह कला, भौलिक रूप से दी जाने वाली विद्या है, जो गुरु के माध्यम से शिष्यों को तथा पुनः उन शिष्यों द्वारा उनके शिक्षार्थियों को दी जाती रही है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी इसी गुरु–शिष्य परम्परा द्वारा ही घराने विकसित होते रहे।

I. घराना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना शब्द गायन अथवा वादन की विशिष्ट शैली का वाचक रहा है। किसी भी घराने का एक मुख्य मार्गदर्शक होता है, उसी के ऊपर घराने की शिष्य परंपरा तथा संगीत शिक्षा का उत्तरदायित्व होता है। एक प्रकार से घराना ही सभी संगीत प्रेमियों का मार्गदर्शक है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के संचित ज्ञान की रक्षा करता आया है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, घराना (घर+आना) शब्द की व्युत्पत्ति घर से मानी जा सकती है। व्यक्ति अपने जीवन की समस्त क्रियाओं का आरम्भ घर से ही करता है, उसी प्रकार संगीत में गायन वादन की विशिष्ट शैली अथवा पद्धति का आरम्भ व्यक्ति विशेष के घर से ही होता है।

शाब्दिक दृष्टि से यह घर, परिवार, कुटुम्ब, वंश आदि का द्योतक होता है, किन्तु कला के विशिष्ट सन्दर्भ में इसका अभिप्राय गुरु शिष्य परम्परा तथा शैली से है।

बाबू भाई बैंकर के अनुसार – संगीत के क्षेत्र में संगीतज्ञ गुरु से शिक्षा प्राप्त करके अपने रोज़ के व्यक्तिगत अभ्यास द्वारा उसमें प्रभाव उत्पन्न करता है। इस प्रकार वह अपनी शिक्षा का विकास करता है, उसको नवीनता प्रदान करता है और उसमें अपने व्यक्तित्व की छाप अंकित करके शिष्यों को सिखाता है। बाद में उसके शिष्य अपने शिष्यों को सिखाते हैं। यही गुरु–शिष्य परम्परा घराना कहलाता है।

उस्ताद बड़े गुलाम अली खां के अनुसार – Music is like an Ocean and no one individual can master every technique without the able guidance of Guru, which highly makes Gharana as an important system prevalent in classical music.

घराने भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा को बनाए रखने में हमेशा सहायक सिद्ध हुए हैं।

II. विष्णुपुर की पृष्ठभूमि

विष्णुपुर भारत के पश्चिम–बंगाल राज्य के बांकुरा (बांकुड़ा) जिले में स्थित एक शहर है। शहर के नाम का अर्थ है 'विष्णु का शहर' अर्थात् भगवान विष्णु का शहर। विष्णुपुर शहर को प्राचीन काल में 'मल्लभूम' नाम से जाना जाता था। मल्लभूम अर्थात् मल्ल (पहलवान) योद्धाओं की भूमि। 7वीं शताब्दी के अन्तिम चरण लगभग 694 ई. में इस राज्य की स्थापना हुई। यह मल्ल राजाओं का निवास स्थान था इसीलिए इस स्थान का नाम मल्लभूम रखा गया। लगभग एक हजार वर्षों तक मल्ल राजाओं ने इस भूमि पर शासन किया। यह स्थान संगीत साधकों के लिए भी तपोभूमि सिद्ध हुआ है। एक समय था जब विष्णुपुर शास्त्रीय संगीत, कला और साहित्य के कारण पूरे बंगाल की राजधानी कहलाता था। लेकिन सत्ता के केन्द्र बदलने और उसके साथ संस्कृति के जुड़ाव के चलते विष्णुपुर धीरे–धीरे विस्मृति में चला गया। परन्तु विष्णुपुर में वह जीवंतता आज भी शामिल है जो वहां सदियों पहले थी। यहां की शानदार वास्तुकला, शिल्प कला, प्रसिद्ध टेराकोटा मंदिर इत्यादि दर्शाते हैं कि कैसे विष्णुपुर ने अपनी विभिन्न परम्पराओं, गौरवशाली संस्कृति तथा अन्य विरासत को संजो कर रखा है।

मल्ल शासक हिन्दू थे तथा वैष्णव धर्म का पूर्णतया अनुसरण करते थे। वैष्णव धर्म अपनाने के पश्चात ही 17वीं व 18वीं सदी में मल्ल शासकों ने प्रसिद्ध टेराकोटा मन्दिरों का निर्माण किया जिनमें रसमंच मंदिर, पंचरतन श्याम राय मंदिर, मृणमयी मंदिर, जोरबंगला, मदनमोहन, राधा माधव आदि और भी कई मंदिर शामिल हैं, जो आज भी विष्णुपुर की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां कई मेले तथा त्योहार मनाए जाते हैं। दुर्गा पूजा तथा काली पूजा भी यहां एक त्योहार के समान ही मनाई जाती है। विष्णुपुर यहां की बालूचरी साड़ियों के लिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त टेराकोटा मंदिरों के अलावा यहां शिल्पकारों द्वारा गुड़िया, घोड़े नटराज, दैनिक उपयोग की

वस्तुएं तथा सजावटी वस्तुओं के रूप में भी टेराकोटा का प्रयोग किया जाता हे। यहां कई प्रकार के हस्त शिल्प बनाए जाते हैं जिन्हें बनाने की प्रथा प्राचीन काल से ही चली आ रही है।

यह तो सत्य है कि विष्णुपुर स्थान अपनी विरासत और संस्कृति से पूर्णतया समृद्ध है, जो आज भी यहां देखी जा सकती है।

III. विष्णुपुर घराने का उद्भव

बंगाल के विष्णुपुर घराने का एक प्रतिष्ठित अतीत है, जिसका इतिहास बहुत कम सामने आया है। इतिहासकारों का कहना है कि मल्लभूम कभी पूर्वी भारत का सांस्कृतिक केन्द्र हुआ करता था। मल्ल राजाओं का राज्य इस्लामी आक्रमणों और मुग़ल सम्राटों के शासन काल के बहुत पहले से ही अपने सांस्कृतिक वर्चस्व के लिए प्रसिद्ध था। ऐतिहासिक अभिलेखों द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि मल्ल राजाओं ने अपने शाही घराने में दरबारी संगीतकारों को नियुक्त किया था, जिससे अंततः तेहरवीं शताब्दी के बाद से यहां संगीत की परम्परा विकसित हुई मानी जाती है। इसके अतिरिक्त वैष्णव परंपरा से पूर्णतया प्रभावित राजा वीर हम्बीर (मल्ल भूम के 49वें राजा) के शासन काल की कुछ रचनाएं तथा गीत भी संगीत की नई शैली की शुरूआत का प्रमाण देती हैं। उस समय से आज तक विष्णुपुर में संगीत की साधना में कोई विराम नहीं आया।

17वीं शताब्दी में मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान, मुग़ल साम्राज्य में इस्लामी कट्टरता अपने चरम पर थी और इस दौरान कई संगीतकार विष्णुपुर के महाराजा के दरबार में चले गए, जो कि कला के एक प्रसिद्ध संरक्षक थे। 'राजा रघुनाथ सिंह द्वितीय' (शासन काल 1702–1712) ने विष्णुपुर में संगीत शास्त्र के सुधार के लिए उन्होंने दिल्ली से तानसेन वंशज 'बहादुर खां' को आमंत्रित किया। बहादुर खां ने उनका यह निमंत्रण तुरंत स्वीकार कर लिया। राजा ने उन्हें राजाश्रय प्रदान किया परिणामस्वरूप 'उस्ताद बहादुर खां' विष्णुपुर में ही बस गए तथा वहीं रहकर विष्णुपुर के संगीत प्रेमी निवासियों को संगीत की शिक्षा प्रदान करना प्रारम्भ किया।

बहादुर खां न केवल अच्छे गायक थे बल्कि वीणा, रबाब व सुर श्रृंगार जैसे अनेक वाद्य बजाने में भी उन्हें महारथ हासिल थी। कुछ समय पश्चात् बहादुर खां को दरबारी संगीतकार के पद पर नियुक्त किया गया। बहादुर खां ने तानसेन के ध्रुपद की जिस परम्परा का निर्वाह किया था, उसी पर बंगाल के विष्णुपुर में एक नवीन घराने की सृष्टि हुई। अतः परिणामस्वरूप विष्णुपुर घराने की सृष्टि बहादुर खां (तानसेन वंशज) से मानी जाती है।

विष्णुपुर में रहकर बहादुर खां के कई स्थानीय बंगाली लोग शिष्य बने। उनके शिष्यों में 'गदाधर चक्रवर्ती' का नाम विशेष रूप से लिख जाता है। गदाधर चक्रवर्ती को ही विष्णुपुर का सर्वप्रथम ध्रुपद गायक माना जाता है तथा इनसे ही विष्णुपुरी–ध्रुपद की धारा प्रवाहित हुई। बहादुर खां की मृत्यु के पश्चात् गदाधर चक्रवर्ती को ही दरबारी संगीतज्ञ के रूप में नियुक्त किया गया।

तत्पश्चात् इसी पद के लिए अगला अवसर 'रामशंकर भट्टाचार्य' के पास आया। 'रामशंकर भट्टाचार्य', 'गदाधर चक्रवर्ती' के सबसे योग्य शिष्य थे। रामशंकर भट्टाचार्य को ही विष्णुपुर घराने की परम्परा का संस्थापक माना जाता है। इन्हें विष्णुपुर के 'प्रधान सूर्य' आदि उपाधियां भी प्राप्त हैं। रामशंकर महान गायन होने के साथ–साथ एक उत्कृष्ट गीत–रचयिता भी थे। इस प्रकार संगीत कला को जीवित रखने के लिए विष्णुपुर घराने के रूप में एक पंक्ति बंगाल के छोटे से शहर विष्णुपुर में प्रारम्भ हुई।

एक अन्य नाम 'जदुनाथ भट्टाचार्य' विष्णुपुर घराने के संगीत के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध नाम है। इनकी तुलना मियां तानसेन से भी की जाती है। वह 'रामशंकर भट्टाचार्य' के सबसे प्रमुख शिष्य थे। इनके पिता मधुसूदन भट्टाचार्य भी एक प्रख्यात ध्रुपद गायक और सितार वादक थे। संगीत परम्परा का यह सिलसिला इसी प्रकार शिष्य–प्रशिष्य आगे बढ़ता रहा तथा विष्णुपुर घराने का विकास होता गया।

IV. विष्णुपुर घराना (गायन अथवा वादन के क्षेत्र में)

विष्णुपुर घराने के अधिकतर प्रदिपादकों ने गायन तथा वादन दोनों विधाओं की शिक्षा साथ–साथ ग्रहण की। जो केवल वादक कलाकारा थे उन्होंने ध्रुपद गायन भी सीखा। कलाकारों का यही मानना था कि एक अच्छा वादक कलाकार बनने के लिए गायन सीखना आवश्यक है। जैसा कि हमें ज्ञात है, तानसेन वंशज 'बहादुर खां' गायन के साथ–साथ कई प्रकार के वाद्य बजाने में भी सक्षम थे। विष्णुपुर में रहकर इन्होंने ध्रुपद गायन के साथ–साथ कई प्रकार के वाद्यों से भी वहां के लोगों को परिचित करवाया। इसके अतिरिक्त विष्णुपुर में मल्ल राजाओं के आमंत्रण पर विभिन्न घरानों के कई कलाकार आते–जाते रहते थे, अतः यहां संगीत प्रशिक्षण का आदान–प्रदान होता रहता था। परिणामस्वरूप अन्य घरानों के गायन अथवा वादन का प्रभाव भी यहां के कलाकारों पर पड़ा।

V. गायन परम्परा

भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में विष्णुपुर घराने ने ध्रुपद गायन की चर्चा में अपना एक अलग स्थान बनाया है। बहादुर खां द्वारा ध्रुपद परम्परा की नींच रखी गई तत्पश्चात् उस नींव को गुरु–शिष्य परम्परा द्वारा और भी मजबूत बनाया गया। यहां की ध्रुपद गायन पद्धति

गौड़हार बानी की अनुसरणकारी है, जिसमें लालित्यपूर्ण, मृदु, शान्त रस, सरल राग–रूप, तथा धीर गति, अभिव्यंजनापूर्ण विशेषताएं शामिल हैं। यहां के प्रदिपादकों ने ध्रुपद के साथ–साथ अन्य गायन शैलियों को भी खुले मन से अपनाया। विष्णुपुर की गायन परम्परा में अधिकतर गीत मल्लवंश के उदार शसकों के आवाहन को संबोधित करते थे। बंगाली ख्याल में कुछ बेहतरीन गीतों का निर्माण किया गया, जिसे कलकत्ता में क्षेत्रीय लोकप्रियता प्राप्त हुई। कुछ गीतों में जयदेव के गीत गोविन्द के कीर्तन का रूप भी दर्शाया गया, जो वैष्णव धर्म के लोगों के बीच लोकप्रिय रहा।

अनेक वर्षों से चली आ रही विष्णुपुर घराने की गायन परम्परा से घराने के कलाकारों द्वारा संजो कर रखा गया। 'बहादुर खां', 'गदाधर चक्रवर्ती' तथा 'रामशंकर भट्टाचार्य' के पश्चात् अगला नाम 'अन्नतलाल बंद्योपाध्याय' (रामशंकर भट्टाचार्य के शिष्य) का लिया जाता है। इनके अन्य शिष्यों में 'अनंतलाल बंद्योपाध्याय' सहित पुत्र 'रामकेशव भट्टाचार्य' (प्रसिद्ध ध्रुपद गायक) 'केशवलाल चक्रवर्ती', 'क्षेत्रमोहन गोस्वामी', 'दीनबन्धु गोस्वामी', इन सभी का विष्णुपुर घराने की गायन परम्परा को आगे बढ़ाने में योगदान रहा है। 'क्षेत्रमोहन गोस्वामी' अपने समय के महान ध्रुपदिये, विद्वान संगीतकार 'अनंतलाल बंद्योपाध्याय' ने भी विष्णुपुर में रहकर अपने अपार ज्ञान द्वारा कई महान संगीतकारों को जन्म दिया। इनके शिष्यों में 'राधिका प्रसाद गोस्वामी', 'रामप्रसन्ना बंद्योपाध्याय', 'गोपेश्वर बंद्योपाध्याय', सुरेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय इन सबका नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

'गोपेश्वर बंद्योपाध्याय' विष्णुपुर घराने के एक महान ध्रुपद गायक हुए तथा इन्होंने घराने की कुछ मूल बंदिशें भी तैयार की। गोपेश्वर बंधोपाध्याय के प्रमुख शिष्यों में 'रमेशचन्द्र बंद्योपाध्याय', 'सत्यकींकर बंद्योपाध्याय' इस घराने के उत्कृष्ट ध्रुपदिये और ख्यालिये हुए हैं।

'सत्यकींकर बंद्योपाध्याय' भारतीय शास्त्रीय संगीत में 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली संगीतकार थे। इन्हें ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, बांग्ला ख्याल जैसी सभी गायन शैलियों में सिद्धता प्राप्त थी। इन्होंने बंगाली तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में कई ख्याल बंदिशों की रचना की।

'सत्यकींकर बंद्योपाध्याय' के प्रमुख शिष्य संगीताचार्य 'अमिय रंजन बंधोपाध्याय' गायन में विष्णुपुर घराने के जीवित प्रतिपादक हैं। अमिय रंजन एक महान संगीत गुरु, प्रतिभाशाली गायक तथा संगीत विद्वान के रूप में अपनी कला के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। यह घराने के सबसे वरिष्ठ ख्याल गायकों में से एक हैं जो आज भी अपनी गायकी का प्रदर्शन कर रहे हैं। इन्होंने असंख्य शिष्यों को गायन की शिक्षा प्रदान की तथा घराने की गायन परम्परा को निरंतर आगे बढ़ाने का प्रयास किया। इनके शिष्यों में 'निहार रंजन' (भ्राता) तथा 'सांतनु बंद्योपाध्याय' (पुत्र) भी घराने की गायन परम्परा का पालन कर रहे हैं तथा एक उत्तम गायक कलाकार के रूप में जाने जाते हैं।

VI. वादन परम्परा

कंठ संगीत ही नहीं अपितु बीन, रबाब, सुरसिंगार, सितार, सरोद आदि वाद्यों के वादन हेतु विष्णुपुर घराने के कलाकारों ने अथक प्रयास किए हैं। विष्णुपुर के लोगों ने स्वयं को गायन के साथ वादन पक्ष से भी पूर्णतया परिचित करवाया। इतिहासकारों का कहना है कि 'गदाधर चक्रवर्ती' के पूर्वज वीणा बजाते थे, 'रामशंकर भट्टाचार्य' के ज्येष्ठ पुत्र वीणा वादन में निपुण थे तथा 'गदाधर चक्रवर्ती' भी वीणा वादन में विशारद बताए जाते हैं। ऐसा भी माना जाता है कि 'मधुसूदन भट्टाचार्य' (जदुभट्ट के पिता) विष्णुपुर घराने के प्रथम सितार वादक थे। इन्होंने काशी से आए एक सितार वादक से सितार वाद्य की शिक्षा ग्रहण की थी। 'गदाधर चक्रवर्ती' के कनिष्ठ पौत्र 'नीलमाधव' ने ध्रुपदांगी सुरबहार वादक 'सैय्यद सज्जाद मुहम्मद' से सुरबहार और लखनऊ घराने से सितार वाद्य की तालीम ग्रहण की थी। 'नीलमाधव' अत्यंत प्रभावशाली संगीतज्ञ थे। इसराज तथा कानून वाद्यों का वादन करने में भी उनको महारत हासिल थी।

'रामशंकर भट्टाचार्य' के पुत्र 'रामकेशव भट्टाचार्य' उत्तर–पश्चिम भारत में इसराज वादन पद्धति लाए तथा उसका प्रचार–प्रसार इन्होंने विष्णुपुर में किया। विष्णुपुर के इसराज वादन में एक सरल, सुमधुर, छन्दयुक्त लयकारी व गतकारी का चमत्कार था। रामशंकर जी के अन्य शिष्य 'क्षेत्रमोहन गोस्वामी' ने बनारस के प्रसिद्ध बीनकार 'लक्ष्मीप्रसाद मिश्रा' से यंत्र संगीत की शिक्षा भी ग्रहण की।

संगीतज्ञ 'अन्नतलाल बंद्योपाध्याय' के पुत्र 'रामप्रसन्ना', 'गोपेश्वर' तथा 'सुरेन्द्रनाथ' यह तीनों वादन संगीत के क्षेत्र में विष्णुपुर घराने के दिग्गज कलाकार के रूप में पहचाने गए। 'रामप्रसन्ना बंद्योपाध्याय' जो कि विष्णुपुर घराने के अग्रणी सितार और सुरबहार वादक थे, इन्होंने राजा सर 'जोतिन्द्र मोहन टैगोर' से सितार तथा उस समय के प्रसिद्ध सुरबहार वादक 'सज्जाद मोहम्मद' से सुरबहार की शिक्षा ग्रहण की थी। आगे इनके शिष्यों में 'गोकुल नाग' (सितार), 'आसेष चन्द्र बंधोपाध्याय' (सुरबहार, सितार, इसराज), 'गौरहारी कविराज' (इसराज, तार शहनाई), 'जोगेशचन्द्र बंधोपाध्याय' (सितार), इन सभी के नाम प्रमुख हैं।

अन्नतलाल के द्वितीय पुत्र 'गोपेश्वर' ध्रुपद गायन के साथ वाद्य संगीत में भी निपुण थे। इनके तृतीय पुत्र सुरेन्द्रनाथ को इसराज, सितार, सुरबहार, बैंजो, जलतरंग, रबाब जैसे कई प्रकार के वाद्य बजाने में महारत हासिल थी।

विष्णुपुर में महान पखावज वादक 'नत्थन पीरबक्श' के आगमन के पश्चात् यहां पखावज वादन तथा तबला वादन की परम्परा भी प्रारम्भ हुई। 'जगतचंद गोस्वामी', 'श्रीपति अधिकारी', 'दुर्लभ भट्टाचार्य', 'अनंतलाल मुखोपाध्याय' विष्णुपुर के प्रसिद्ध पखावज वादकों में से थे। घराने के कुशल तबला वादकों में 'सुबोध नंदी' तथा इनके भतीजे 'लालमोहन नंदी' का नाम लिया जाता है।

वादन के क्षेत्र में 20वीं शताब्दी के प्रसिद्ध सितार वादक 'संगीताचार्य गोकुल नाग' का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इन्होंने सर्वप्रथम अपने पिता, जो एक सितार वादक थे, 'गोविन्द नाग' से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। ततपश्चात् 'रामप्रसन्न बैनर्जी' के मार्गदर्शन में रहे। कई तरह के वाद्य यंत्र बजाने में इनको सिद्धता प्राप्त थी। जैसे वीणा, सुरबहार, इसराज, सितार, सरोद, तबला, तबला तरंग, हारमोनियम, जलतरंग इत्यादि। इनके शिष्यों में पुत्र 'मणिलाल नाग' एक जीवित प्रतिपादक हैं, जिन्होंने विष्णुपुर घराने को भारतीय शास्त्रीय संगीत में सितार वादन के क्षेत्र में परिचित करवाया। इन्होंने घराने की सितार वादन शैली का देश–विदेश में प्रचार–प्रसार किया, सितार की अनगिनत प्रस्तुतियां देश–विदेश में दी तथा सितार वादन परम्परा को ऊंचाइयों तक पहुंचाया। मणिलाल नाग के प्रमुख शिष्यों में विदुषी 'मीता नाग' (पुत्री) तथा स्वर्गीय 'सौमित्रा लहरी' का नाम लिया जाता है। 'सौमित्रा लहरी' जी के सितार वाद्य में निश्चित रूप से गुरु के वादन की छवि प्रदर्शित होती थी। पुत्री 'मीता नाग' अपने पिता द्वारा सौंपे गए दायित्वों का भली–भांती पालन कर रही हैं तथा विष्णुपुर घराने की सितार वादन परम्परा को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रही है।

VII. निष्कर्ष

विष्णुपुर स्थान अपनी विरासत और संस्कृति के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। सर्वप्रथम मल्ल राजाओं ने तथा स्थानीय निवासियों ने इसे समृद्ध बनाने में कड़ी मेहनत की इसीलिए आज भी यहां की गौरवशाली संस्कृति और भव्य विरासत जीवित है। उसी प्रकार संगीत के क्षेत्र में कई उतार–चढ़ाव देखने के बावजूद भी संगीत प्रेमियों ने विष्णुपुर में संगीत को किसी न किसी रूप में हमेशा से ही जीवित रखा। मल्ल राजाओं के दरबार संगीतज्ञों द्वारा प्रारम्भ हुई संगीत परम्परा ने धीरे–धीरे शिष्य–प्रशिष्य प्रणाली द्वारा घराने का रूप लिया। परिणामस्वरूप सर्वप्रथम ध्रुपद गायकों का विष्णुपुर घराना बनकर सामने आया। घराने के सभी महान संगीतज्ञों द्वारा पीढ़ी–दर–पीढ़ी गुरु–शिष्य परम्परा ने इसे जीवित रखा। विष्णुपुर घराने के वाद्य संगीत अनुशीनलन के विषय में यह ज्ञात होता है कि गायन के साथ–साथ वादन संगीत भी यहां प्रारम्भ (बहादुर खां के समय) से ही विद्यमान था। आगे चलकर यहां के वादक कलाकारों ने वादन की शिक्षा जहां से भी सम्भव हो सकता था, ग्रहण की। परिणामस्वरूप कई वादक कलाकारों ने जन्म लिया तथा शिष्य–प्रशिष्य वादन परम्परा को बढ़ावा मिला। आज विष्णुपुर गायन का घराना होने के साथ–साथ सितार वादन का घराना के रूप में भी जाना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पत्रिकाएँ :

1. संगीत (घराना अंक), मासिक जनवरी–फरवरी 1982, संगीत कार्यालय हाथरस
2. संगीत कला विहार, जून–1957, गान्धर्व निकेतन, पलॉट–5, सेक्टर 9ए, वाशी, नवी मुम्बई, महाराष्ट्र–400703
3. विष्णुपुर घराना : विशिष्ट शैली, मदनलाल व्यास, संगीत (नवम्बर–2006), संगीत कार्यालय हाथरस
4. विष्णुपुर घराना और उसका संगीत, अमित प्रकाश सिंह, कला वसुधा, अक्तूबर 2002–मार्च 2003
5. Vishnupur_The famous gharana of Bengal, Manilal Nag, Jan-Mar 1973, Journal of the Indian Musicological Society, Baroda.

पुस्तकें :

6. बंगाल के नवजागरण का संगीत, डॉ. लिपिका दासगुप्ता, प्रथम संस्करण : 2006 मनीष प्रकाशन बी. 33/33 ए., न्यू साकेत कालोनी, बी.एच.यू. वाराणसी–7
7. जहान–ए–सितार, बी.एस. सुदीप राय, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रब्यूटर्स, अंसारी रोड़ दरियागंज–110002 (2004)